P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-9* May- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शिक्षा के द्वारा उन्नति का प्रयास – राजस्थान की जनजातियों के विशेष संदर्भ में

अनिता कटारा
व्याख्याता,
भूगोल विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
कोटा

सारांश

कुछ जातियाँ जो यहां हजारों साल से निवास कर रही थी या एक काल में आकर बसी उन्होनें अपना आवास, अर्थ व्यवस्था एवं समाज को यथावत रखा, उसमें बदलाव लाने की प्रवृति नहीं हुई। अतः ऐसी जातियाँ दूर, पहुंच से बाहर, एकांकी तथा गहन क्षैत्रों में चली गई, तथा वहीं जीवन यापन करने लगी। ऐसी जातियां आदिवासी जातियां कहलाई। इनको राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने के लिये यह शोध एक छोटा सा प्रयास है।

मुख्य शब्द : अनुसूचित जनजाति, राजस्थान, साक्षरता, पिछडापन, लैंगिक समानता, विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन।

प्रस्तावना

राजस्थान में रहने वाली भील, मीणा, गरासिया व सहरिया जनजाती के क्षैत्रों को आधार माना है।

अवधि

इस पत्र को बनाने में लगभग 1 माह का समय लगा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. जनजातियों की साक्षरता की स्थितियों को जानना।
2. विभिन्न जनजातियों की महिलाओं में साक्षरता के अंतर को जानना।
3. शिक्षा के प्रभाव को जनजातियों पर जानना।

साहित्यावलोकन

बून्दी जिले में शैक्षिक विकास के स्तर (1971–2001) (एक भौगोलिक अध्ययन) 2008 – दीप्ति हाडा, लघु शोध प्रबन्ध।

कोटा जिले में साक्षरता (एक भौगोलिक अध्ययन) – लघु शोध प्रबन्ध कोशिमा अन्सारी (2009–10) उपरोक्त शोध प्रबंधो के अलावा इस विषय पर बहुत कम काम किया गया है। इस शोध में अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा द्वारा उन्नति को बताया गया है।

परिकल्पना

1. शिक्षा की कमी का प्रभाव उत्तरोत्तर सभी क्षैत्रों पर पड़ता है।
2. शिक्षा की कमी से जनजातियां बाहरी क्षैत्रों से मेल मिलाप नहीं कर पाते हैं।
3. इस अध्ययन द्वारा जनजातियों के विकास पर ध्यान दिया जा सकता है।

विधि तंत्र

द्वितीय स्त्रोत में प्रकाशित पुस्तकों, शोध पत्रिकाऐं, निजी संस्थानों का प्रयोग किया गया है। इसके लिये मानचित्र व आरेखों का प्रयोग भी किया गया है।

खोज

मीणा समाज को छोडकर भील, गरासिया, डामोर, ढाका सहरिया आदि लोग अपनीी आदिवासिता को अपनाये हुये हैं। इसका मुख्य कारण शिक्षा का अभाव है इसके कारण आर्थिक विभिन्नता देवी, देवता के प्रकोप दिखाई देते हैं।

समस्या के समाधान संबंधी सुझाव।

1. सर्वप्रथम जनजातियों को आवश्यकतानुसार स्थानीय स्तर पर सहायता प्रदान की जावे।
2. जनजातियों के लोगो के लिये विभिन्न योजनाऐं लागू की जावे।

परिचय एवं आवश्यकता

राजस्थान राज्य मे सन् 2001 की जनगणनानुसार राज्य मे 12.60% जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की है, जिसमे 15.38% ग्रामीण एवं 2.53% शहरी जनसंख्या है। भारत मे 8.2% जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की है। अनुसूचित जनजाति के लोग अधिकांशतः गाँव, जगंलो, पहाड़ो, उबड–खाबड धरातल बीहड़ो या एकाकी स्थानो मे निवास करते है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-9* May- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पूर्व मे ये शर्मिले, ईमानदार, गठले शरीर के तथा मेहनती हुआ करते थे। राजस्थान मे सर्वाधिक अनुसूचित जाति की सख्या बाँसंवाड़ा मे 72.27%, डुँगरपुर मे 65. 14%, उदयपुर जिले मे 47.86%, दोसा मे 26.82%, सिरोही मे 24.76%, सवाईमाधोपुर मे 21.58%, चित्तौड़गढ मे 21.53% एवं बूँदी मे 20.24% पाई जाती है। इन अनुसूचित जन जातियों मे अपनी जनजाति की अलग ही भाषा, अलग ही सामान्य सस्कृति, रीति–रिवाज, खानपान, कानून, नियम, अलग ही नाम सामाजिक सगंठन आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं विस्तृत सामाजिक सगंठन होता है, "स्थानिय आदिम समूहों के किसी भी सग्रंह को, जो एक सामान्य क्षैत्र मे रहता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो और एक सामान्य सस्कृति का अनुसरण करता हो, जनजाति कहते हैं।Þ इम्पीरियल गजटियर ऑफ इंडिया के अनुसार, एक जनजाति परिवारो का एक सकंलन है जिसका एक नाम होता है, जो एक बोली बोलते है एक सामान्य भू–भाग पर अधिकार रखती है या अधिकार जताती है और प्रायः अर्न्तविवाह नहीं करती है। किन्तु अब समय स्तर एवं शैक्षणिक परिवर्तन के साथ–साथ इनकी आदतो मे भी परिवर्तन हो रहा है। लेकिन फिर भी साक्षरता का प्रतिशत कम होने के कारण इस प्रकार के शोध की आवश्यकता है।

राजस्थान मे अनुसूचित जनजाति की संख्या

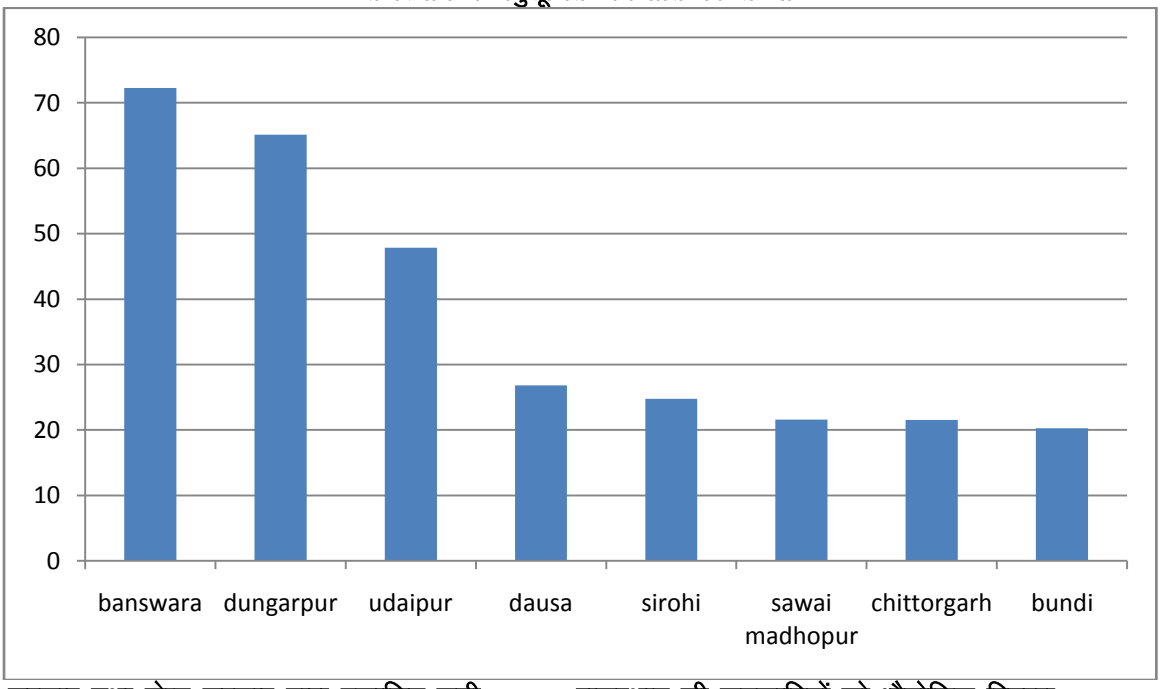

राजस्थान सरकार तथा केन्द्र सरकार द्वारा प्रकाशित सूची में 12 अनुसूचित जनजातियाँ एवं उनकी उपजनजातियाँ वर्णित है।–

1. भील, भील–गरासिया, ढोली–भील, डूंगरी–भील, डूंगरी गरासिया, मेवाती भील, रावल भील, ताड़वी भील, भागलिया, भिलाला, पावड़ा, वसावा, वसावे।
2. भील–मीणा
3. डामोर, डमरिया
4. वनका, तड़वी, वालवी, तेताड़िया
5. गरासिया (राजपूत गरासिया को छोड़कर)
6. काथोड़ी, कतकूड़ी, ढोर, काथ्रोड़ी, ढ़ोर कतकड़ी, सोन काथोड़ी, सोन कतकड़ी।
7. कोकना, कोकनी, कूकना।
8. कोली खोर टोकरे कोली, कोलचा, कोलघा।
9. मीणा
10. नायकड़ा, नायक, चोलियावाला नायक, कापडिया नायक मोटा नायक, नाना नायक।
11. पटोलिया
12. सहरिया, सहारिया।

राजस्थान की जनजातियों को भौगोलिक वितरण

भौगोलिक विवरण की दृष्टि से जनजातियों को निम्न लिखित भागों में विभाजित किया जाता है।

दक्षिणी राजस्थान

राजस्थान का दक्षिणी भाग जनजातियों की संख्या एवं विस्तार की दृष्टि से बहुत ही घना बसा हुआ है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के इस भाग में कुल जनजाति जनसंख्या का लगभग 53 प्रतिशत भाग इसी क्षेत्र में बसा हुआ है। भील, मीणा, गरासिया और दामोड़ जनजातियां मुख्यतः इसी क्षेत्र में पाई जाती है। डूंगरपुर, बांसवाडा एवं उदयपुर जिलों में अधिकांशतः भील लोग निवास करते हैं जो 70 प्रतिशत तक हैं। इनका यह निवास क्षेत्र 'बागड़' प्रदेश कहलाता है। भील–मीणा जनजाति के 72.27 प्रतिशत लोग बांसवाडा जिले में तथा 65.14 प्रतिशत लोग डूंगरपुर जिले में निवास करते हैं। दामोड़ भील जनजाति के 96.82 प्रतिशत लोग डूंगरपुर जिले में निवास करते हैं। सीमलवाड़ा पंचायत समिति में इनकी संख्या सर्वाधिक पाई जाती है। कुछ मात्रा में भील चितौड़गढ़ जिले में भी पाये जाते हैं। सिरोही जिले में गरासिया जनजाति के लोग

अधिक पाये जाते हैं जहां इनका 19.74 प्रतिशत भाग है। उदयपुर जिले में गरासिया लोगों का प्रतिशत सर्वाधिक 56.63 पाया जाता है। सिरोही जिले में गरासियों के अलावा भील–गरासिया, ढोली–भील, पावरा भारवा काठौडिया, कालीखोर, नेकदा, पटिलिया, टाड़वी तथा बालवी आदि जनजातियां भी निवास करती हैं। भील जनजाति के लोग इस क्षेत्र में अधिकांशतः खेती के व्यवसाय से जुड़े हैं जो नदी, घाटियों, सीढ़िनुमा खेतों, बेसिनों तथा समतल भू–भाग में मक्का, गन्ना, अदरक, हल्दी, गेहूं, जौ, अरहर, फल आदि की खेती करते हैं। कहीं–कहीं भील लोग स्थानान्तरित कृषि का भी प्रयोग करते हैं। जिसे 'वालरा' कहते हैं। अब सरकारी प्रयासों से इनका कायाकल्प हो रहा है। तथा सैंकडों हजारों आदिवासी इस क्षेत्र में शिक्षा, संस्कृति स्तर आदि की दृष्टि से उन्नत होते जा रहे हैं।

कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत (2001)

क.सं.	जिले का नाम	कुल जनजाति का प्रतिशत	ग्रामीण	शहरी
1.	अजमेर	2.41	3.09	1.40
2.	अलवर	8.02	8.95	2.54
3.	बांसवाडा	72.27	77.03	10.56
4.	बांरा	21.23	24.86	3.25
5.	बाडमेर	6.04	6.37	1.95
6.	भरतपुर	2.24	2.52	1.08
7.	भीलवाड़ा	8.97	10.43	3.32
8.	बीकानेर	0.36	0.18	0.68
9.	बून्दी	20.24	23.76	4.57
10.	चितौड़गढ़	21.53	24.94	3.69
11.	चूरू	0.52	0.45	0.72
12.	दौसा	26.82	29.22	5.92
13.	धौलपुर	4.84	5.77	0.62
14.	डूंगरपुर	65.14	68.55	21.78
15.	श्रीगंगानगर	0.82	0.30	2.37
16.	हनुमानगढ़	0.66	0.37	1.80
17.	जयपुर	78.86	11.99	3.63
18.	जैसलमेर	5.48	5.67	4.40
19.	जालौर	8.75	9.06	4.99
20.	झालावाड़	12.02	13.42	3.58
21.	झुंझुनू	1.92	2.21	0.84
22.	जोधपुर	2.76	3.22	1.85
23.	कोटा	9.69	16.14	4.07
24.	नागौर	0.23	0.24	0.20
25.	पाली	5.81	6.66	2.73
26.	राजसमंद	13.09	14.23	5.51
27.	सवाईमाधोपुर	21.58	25.71	4.01
28.	सीकर	2.73	3.19	0.99
29.	सिरोही	24.76	28.16	9.0
30.	टोंक	12.04	14.94	1.06
31.	उदयपुर	47.86	51.48	5.84
32.	करौली	22.37	25.35	4.38
	कुल राजस्थान	**12.56**	**15.92**	**2.87**

Source : Some facts about Rajasthan 2010 Directorate of Economics & statistics, Raj, Jaipur, P.P. S5-38

पश्चिमी राजस्थान

जनजाति क्षेत्रों में दूसरा क्षेत्र पश्चिमी राजस्थान का है जहाँ सीकर, झुन्झुनुं, चूरू, श्रीगंगानगर, नागौर, जैसलमेर, पाली, जोधपुर, जालौर तथा बाडमेर के शुष्क क्षेत्र के 21 जिले सम्मिलित हैं। इस भाग में 8.19% भाग जनजाति के लोगो का निवास करता था। भील–मीणा इस क्षेत्र मे मुख्य रूप से पाये जाते हैं। जालौर जिले में भील–मीणा जाति का 61.94% भाग निवास करता है जबकि गरासिया जनजाति का 20.11% भाग पाली जिले में निवास करता है। अतः इस भाग में जनजातियों की संख्या न्यूनतम पाई जाती है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-9* May- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दक्षिणी–पूर्वी राजस्थान

इस क्षैत्र में जयपुर, दौसा, अलवर, भरतपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, अजमेर, टोंक, भीलवाड़ा, बून्दी, कोटा, बांरा, तथा झालावाड़ जिले आते है। चित्तौड़गढ़, सिराही, उदयपुर जिलों के भी कुछ भाग इसमे सम्मिलित है। इस क्षैत्र मे भील, भील–मीणा, मीणा तथा सहरिया जनजातियाँ निवास करती है। भील–मीणा जनजाति का 7.95% भाग अजमेर जिले मे निवास करता है। सहरिया जनजाति का 99.47% भाग कोटा जिले में निवास करता है। मीणा जाति के अधिकांशतः लोग 85% इसी क्षैत्र मे पाये जाते है। विशेष कर करौली, सवाईमाधोपुर, दौसा और जयपुर जिलो मे सर्वाधिक मीणा जनजाति के लोग पाये जाते हैं। ये ही लोग वास्तव मे सरकारी आरक्षण का केन्द्र एवं राज्य स्तर पर लाभ लेकर आज धन–धान्य से सम्पन्न हो गये हैं। कतिपय गाँव करौली के ऐसे है जहाँ 20 से 25 आई. ए. एस. एवं आई. पी. एस. तथा राज्य स्तरीय सेवाओ के अधिकारी है। इनमे चेतना एवं जागृति से इनके स्तर, अर्थव्यवस्था, सामाजिक स्वरूप आदि मे बहुत परिवर्तन हो गया है।

राजस्थान मे जनजातियों मे साक्षरता

राजस्थान की जनजातियों में साक्षरता का प्रतिशत बहुत कम है। फिर भी सर्वाधिक साक्षरता का प्रतिशत पुरूष वर्ग में मीणा जाति में पाया जाता है। सन् 2001 जनगणना के अनुसार राज्य में 2480331 जनजाती के लोग ही साक्षर थे जिनमें 62.10 प्रतिशत पुरूष एवं 26. 20 प्रतिशत स्त्रियां ही साक्षर थी। राज्य की जनजातियों में साक्षरता का दशाब्द प्रतिशत बढ़ा है। अनुसूचित जनजातियों में सर्वाधिक साक्षरता दर पुरूषों में 85.77 झुझूनू जिले में तथा न्यूनतम 38.74 जालौर जिले में पाई जाती है। स्त्रियों में सर्वाधिक साक्षरता दर झूंझूनू में 55.64 एवं न्यूनतम जालौर में 11.10 पाई जाती है।

शिक्षा के क्षैत्र में जनजाति लोगों का पिछडापन अत्याधिक था। जहां सन् 1981 में राज्य की साक्षरतादर 24.38 प्रतिशत थी वहां जनजाति के लोगों में यह 10.27 प्रतिशत थी। तथा जनजाती महिलाओं में मात्र 1.20 प्रतिशत थी। सन् 1991 की जनगणनानुसार जहां राज्य की साक्षरता दर 38.55 प्रतिशत रही वहां जनजाति के लोगों की साक्षरता दर 12 प्रतिशत के लगभग रही। स्त्रियों की साक्षरता दर 2 प्रतिशत पाई गई। सन् 2001 में पुरूष साक्षरता दर 62.10 प्रतिशत और स्त्रियों की साक्षरता दर 26.20 प्रतिशत रही है।

राजस्थान की जनजातियों में साक्षरता (1961–2011)

वर्ष	1961	1971	1981	1991	2001	2011
साक्षरता का प्रतिशत	39	6.47	10. 27	15. 03	44.15	52.8

चित्र संख्या – 2
राजस्थान की जनजातियों में साक्षरता (1961–2011)

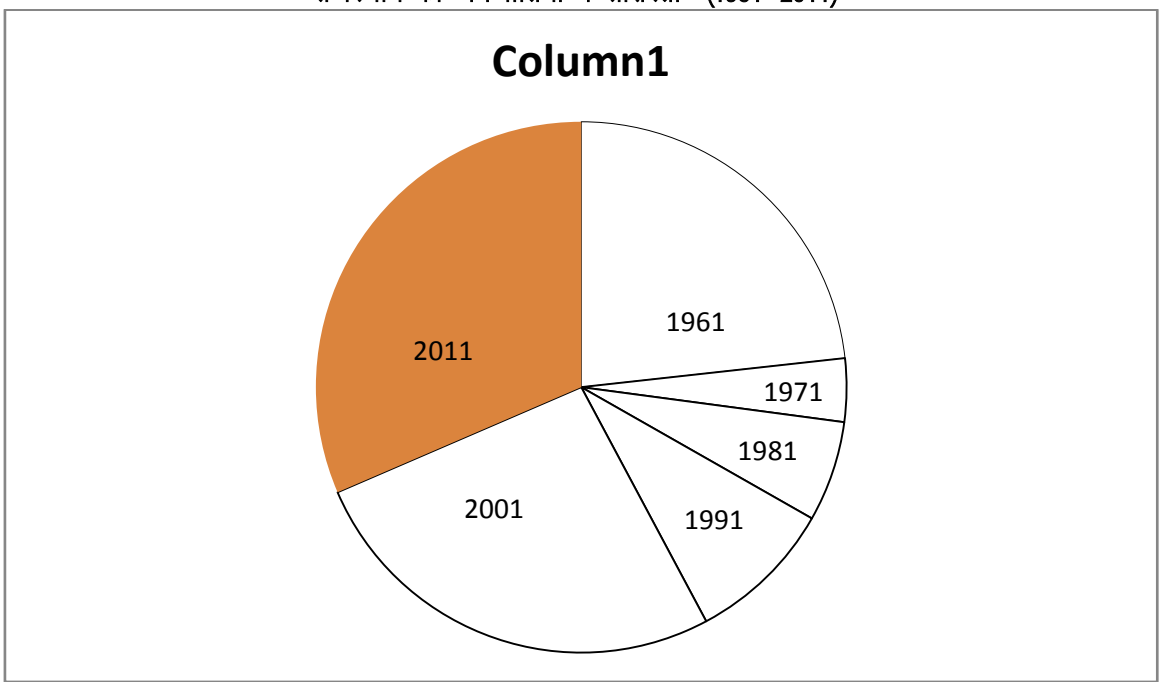

Year	ST		
	Male	Female	Total
1961	13.83	3.16	8.53
1971	17.63	4.85	11.30
1981	24.52	8.04	16.35
1991	40.65	18.19	29.60
2001	59.17	34.76	47.10
2011	68.53	49.35	58.96

Literacy Rate of ST Population (1961-2011) (India)

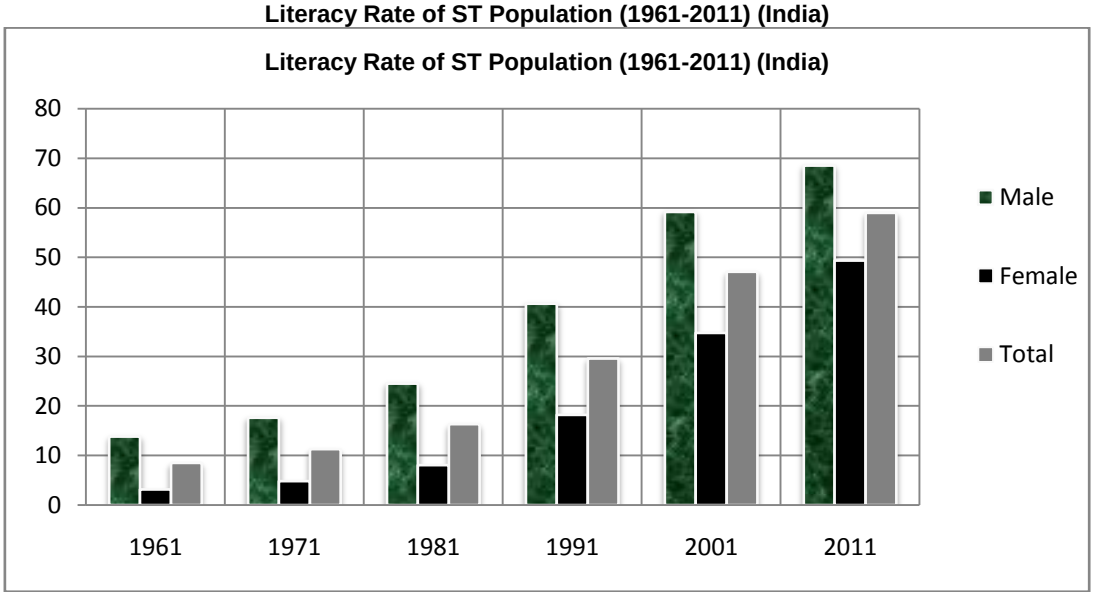

Rajasthan Literacy Rate of Scheduled Tribes (Census 2011)

State	Total			Rural			Urban		
	Person	Male	Female	Person	Male	Female	Person	Male	Female
Rajasthan	52.8	67.6	37.3	51.7	66.7	36.1	96.0	81.0	55.6

Schedule Tribes Population in 1981

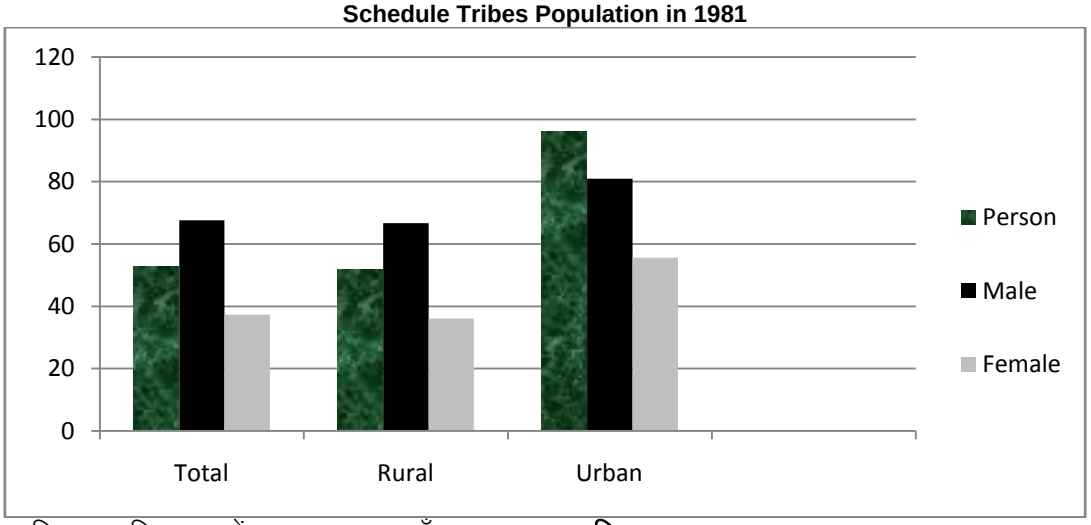

महिला सशक्तिकरण में भारत का 108 वाँ स्थान है। भारत में लैगिंक समानता मे तकरीबन 21 वें पायदान की गिरावट दर्ज की गई है, तो फिर अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की तो बात ही कहाँ की जा सकती है।

जनजातिय जनसंख्या की वृद्धि दर 3.12 प्रतिशत है, वार्षिक राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि दर 2.14 प्रतिशत है, अर्थात जनजातिय जनसंख्या वृद्धि दर राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि दर से तीव्र है।

शिक्षा का प्रभाव

यद्यपि सरकारी प्रयत्नो से जागृति अवश्य आई है और शिक्षा सम्पर्क तथा सोहार्द्र से इनका एकाकी, पहाड़ी जीवन टूटा है। फिर भी अधिकांशतः पुरूष एवं स्त्रियाँ अशिक्षित हैं, बेरोजगार हैं तथा गरीब है। सरकारी आरक्षण योजना का भी भील लोग अधिक लाभ नही ले पाये। अब इन पर ईसाई मिशनरियों का प्रभाव भी पडता जा रहा है। भगत आन्दोलन के प्रर्वतक सरमल दास तथा गोबिंद गिरी

के प्रभाव के कारण यह लोग हिन्दू धर्म के समीप आये हैं तथा मास मदिरा का त्याग किया है। अपराधों में कमीं आई है। समाजिक कुरितियों में कमी आई है। अब भील लोग ज्यों ज्यों शहरी लोगो के सम्पर्क में आ रहे हैं इनकी जीवन शैली में भी परिर्वतन शनैः शनैः आ रहा है।

मनुसई की संकल्प संस्था सिकोडेकोन सहरिया लोगों के कायाकल्प के लिए कार्य कर रही हैं। ये संस्थाएँ इन लोगों को साक्षर तो बना ही रही है साथ ही इनमे जनचेतना भी पैदा कर रही है। सहरिया लोगो के विकास के लिए एक योजना के माध्यम से लोगों को स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि एवं चहूँमूखी विकास के लिये सक्रिय है, ताकि इन लोगों को निम्न जीवन स्तर में सुधार आ जावे। इनके क्षैत्र में संसाधनों का समुचित एवं उचित उपयोग करने पर भी सरकार कार्यशील है। इनके कृषि, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास के लिये कार्य कर रही है। इनके शोषण के खिलाफ भी सहरिया लोग अब उठ खडे हुऐ हैं।

सहरिया लोगों में शिक्षा प्रसार की कमी के करण ही इनका जीवन स्तर उठ नहीं पाया है। तथा विकास भी कम हुआ है। इनकी अर्थव्यवस्था भी अभी उन्नत नहीं हुई है। अभी तक हीरालाल सहरिया ही इनमें से एक मात्र विधायक हुये हैं। सहरिया जनजाति के उत्थान के लिये 2013 के राज्य बजट में किशनगंज में आई.टी.आई. हवाई पट्टी और विशेष पैकेज दिया गया है। इन जनजातियों के अलावा राजस्थान की अन्य प्रमुख जनजातियों में दामौड, कन्जर, सांसी, काथौडी आदि है।

सहरिया विकास कार्यक्रम

बांरा जिले की किशन गंज एवं शाहाबाद पंचायत समितियों के सहरिया जनजाति के लोगों के कल्याण के लिये यह योजना चलाई गई है। इसके द्वारा इनकी आर्थिक स्थिति मे सुधार हेतु कृषि, पशुपालन, शिक्षा, चिकित्सा, सिचाईं आदि मे सुधार करता है। सहरिया विद्यार्थी निःशुल्क शिक्षा, भोजन, आवास, किताबें, वर्दी आदि प्राप्त करते हैं। सहरिया लोगों के लिये सरकारी नौकरियों में 25 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान रखा गया है। नवीं योजना में सहरिया विकास कार्यक्रमों पर 5.62 करोड़ रू. व्यय किये गये।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिये छात्रावासों की संख्या 604 की गई है। छात्रावासों में रहने वाले विद्यार्थियों का मेस भत्ता बढाकर 675 रू. प्रतिमाह किया गया है।

बून्दी जिले की प्रमुख अनुसूचित जनजाति मीणा जनजाति है। 1971 में जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 20.11 प्रतिशत थी 2001 में यह 20.24 प्रतिशत है। जनसंख्या में यह कम वृद्धि जागरूकता व शिक्षा में वृद्धि के कारण अनुसूचित जनजाति जनसंख्या के विकास हेतु किये गये सरकारी प्रयासो का उपयोग किया है तथा समाज में इन्होनें प्रतिस्ठित प्रयास किया है।

बाल विवाह, भ्रुण हत्या जैसे अपराधों का रूकना व जनसंख्या नियंत्रण शिक्षा में वृद्धि के कारण हुआ है।

मीणा समाज को छोडकर भील, गरासिया, डामोर, ढाका सहरिया आदि लोग अपनीी आदिवासिता को अपनाये हुये हैं। इसका मुख्य कारण शिक्षा का अभाव है इसके कारण आर्थिक विभिन्नता देवी, देवता के प्रकोप दिखाई देते हैं।

अनुसूचित जनजाति में छात्रों की संख्या 9.72 से 15.42 हुई है अर्थात शिक्षा में वृद्धि हुई है।

सरकारी प्रयत्नों एवं इनके स्वंय के परिश्रम से यह जाति अब सम्पन्नता की ओर अग्रसर हो रही है। खेतिहर मीणा लोगों के पास ट्रेक्टर, मोटर साईकल, भैंस, खेती सभी सम्पन्नता के सूचक हैं। इसके अलावा परिवार का पढ़ा–लिखा व्यक्ति कहीं न कहीं अवश्य नौकरी करने लग गया है। अतः इनकी अर्थव्यवस्था में आशातीत परिवर्तन हुआ है। सरकार ने राज्य के 11 जिलों के 2939 गाँवो के लगभग 10 लाख मीणा जाति के विकास के लिये माडा परियोजना लागू की है। जिसके अन्तर्गत स्कूली/कॉलेज बच्चों, बच्चियों को पढ़ने, किताबों, छात्रावास आदि की निःशुल्क सुविधा प्रदान की जा रही है। इनकी गरीबी उन्मूलन, स्तर को सुधारने, बेरोजगारी को समाप्त करने और जनजाति के आधारभूत ढांचे को विकसित करना ही इनका विकास है।

जनजाति की प्रमुख समस्याओं में शिक्षा, स्वास्थ्य, पूंजी की कमी, प्रौद्योगिकी की जानकारी की कमी, बेरोजगारी, गरीबी, निम्न जीवन स्तर।

निष्कर्ष

जनजाति की प्रमुख समस्याओं में शिक्षा, स्वास्थ्य, पूंजी की कमी, प्रौद्योगिकी की जानकारी की कमी, बेरोजगारी, गरीबी, निम्न जीवन स्तर आदि हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *प्रो एच.एस. शर्मा – राजस्थान का भूगोल – डॉ एम.एस. शर्मा – 2015 P. 426-439*
2. *सक्सेना हरिमोहन, तिवारी अमित – प्रादेशिक भूगोल।*
3. *Source : Some facts about Rajasthan 2010 Directorate of Economics & statistics, Raj, Jaipur, P.P. S5-38*
4. *राजस्थान पत्रिका मार्च 2013*
5. *वार्षिक योजनाओं की समीक्षा रिपोर्ट।*
6. *राजस्थान पेनोरमा – 1 (राजस्थान का भूगोल अर्थव्यवस्था, राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था, खेल व विविध अघतन आंकडो सहित।*
7. *सिंह एच.डी. बी.आर.–P-283 डॉ भल्ला लाजपतराय – P-1998-246*
8. *शर्मा डी.डी. – गुप्ता एम.एल., भारतीय सामाजिक समस्याएं 2004 P-298*
9. *15 वीं जनगणना 2011 के अनुसार*
10. *सिंह वी.एस. सिंह मनीष कुमार – मानव भूगोल – 2016 P-302, 350*
11. *राजस्थान पत्रिका – 2017 नवम्बर*